International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-04-2025, Accepted: 29-05-2025, Published: 13-05-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 59-61

उत्तर आधुनिक नव शैक्षणिक समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में और सिर्फ तितली

Sreeja K[1], Dr. Abdul Jabbar M[2]
[1] Department of Hindi, Government Art's and Science College Calicut, Kerala, India
[2] Associate Professor, Department of Hindi, Farook College (A), Kerala, India

सारांश
यह आलेख उत्तर आधुनिक नव शैक्षणिक समस्याओं को उपन्यास "और सिर्फ तितली" के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करता है। इस उपन्यास में बालकों की शिक्षा से जुड़ी सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक जटिलताओं को उजागर किया है। पारंपरिक शिक्षण पद्धति और गुरुकुल व्यवस्था की तुलना में आज की शिक्षा एक बाज़ारी वस्तु बन गई है, जहाँ स्कूलों को व्यवसायिक संस्थान के रूप में चलाया जा रहा है। उपन्यास में स्कूलों के व्यावसायीकरण, भ्रष्टाचार, असमानता, और शिक्षक व विद्यार्थियों के शोषण को केंद्रीय विषय बनाया गया है। सरकारी स्कूलों के पतन और निजी स्कूलों के नाम पर हो रहे आर्थिक शोषण की सच्चाई को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों के क्षय, अध्यापकों की सीमित भूमिका, वर्ग आधारित भेदभाव और पदोन्नति में भ्रष्ट आचरण भी इस व्यवस्था की विफलता को दर्शाते हैं। लेख में यह भी स्पष्ट किया गया है कि उत्तर आधुनिक युग में शिक्षा अब व्यक्तित्व विकास या सामाजिक परिवर्तन का माध्यम नहीं, बल्कि स्वार्थ, सत्ता और पैसा कमाने का ज़रिया बन चुकी है। इस परिवेश में तितली एक रूपक के रूप में बार–बार सामने आती हैकृजो बालक की मासूमियत, स्वतंत्रता और कल्पनाशीलता की प्रतीक है, लेकिन उसे शिक्षा व्यवस्था की कठोरता में कैद कर दिया गया है। इस प्रकार, यह लेख समकालीन शिक्षा व्यवस्था की वास्तविकताओं को उजागर करते हुए हमें यह सोचने को मजबूर करता है कि क्या आज की शिक्षा प्रणाली वास्तव में "विद्या का मंदिर" है या फिर केवल एक "धंधा"?

मूल शब्दः उत्तर आधुनिक युग और शिक्षा में बदलाव, "और सिर्फ तितली" उपन्यास की शैक्षिक आलोचना, सरकारी स्कूलों की उपेक्षा, स्कूलों में भ्रष्टाचार, शिक्षा का व्यवसायीकरण, शिक्षकों का नजरिया, पदोन्नति एवं शोषण, समाज पर प्रभाव

शैक्षिक समस्या हमेशा हमारे समाज में मौजूद है। जब एक बच्चा पैदा होता है तो वह इस दुनिया से बिल्कुल अलग होता है। वह समाज के बारे में कुछ नहीं जानती। उसकी पालन पोषण एवं परवरिश से वह इस दुनिया से जुड़कर रहते हैं। हर माँ बाप अपने बच्चों को सही शिक्षा देना चाहती है। इसलिए हम लोग बच्चों को बचपन में ही बहुत अच्छे और बढ़े स्कूलों में दाखिला करवाती है।

शिक्षा जो है माता के समान पालन पोषण करते हैं, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यों संपन्न करती है, तथा पत्नी की बांधी सांसारिक चिंताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के प्राप्ति से बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास हो जाता है। जिस से वह समाज का उत्तरदाई घटक एवं राष्ट्र का उन्नत चरित्र नागरिक बनकर समाज की उन्नति के लिए काम कर सके।

एक व्यक्ति को पूर्ण सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा का विशेष योगदान रहता है। शिक्षा को मानव जाती के पूर्ण प्रगति का श्रेष्ठतम साधन कहा जा सकता है। आधुनिक धारणा के अनुसार शिक्षा बालक के अंदर छिपी हुई समस्त शक्तियों को सामाजिक धरातल पर विकसित करने का कला है।

किसी भी व्यक्ति के संपूर्ण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसका एक पक्ष तो व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करता है जिसमें बुद्धि, रुचि ,आत्मविश्वास व प्रोत्साहित होता हैं और दूसरा पक्ष समाज के बाल विकास में योगदान देता है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। असल में उसका संपूर्ण जीवन काल शिक्षा काल ही है।

आज उत्तर आधुनिक दौर है। इस दौर में हर चीज की परिभाषाएं बदल रही है। हर एक चीज नहीं रूप धारण कर रहे हैं। आज हमारे भारत की शिक्षा भी बदल गई है। परंपरागत तरीके से देखा जाए तो हमारे समाज में शिक्षा गुरुकुल की तरीके से दे रहा था। गुरु को भगवान के समान महत्व दिया जाता था। लेकिन आज सब कुछ बदल गया।

आज इस उत्तर आधुनिक दौर में आकर शिक्षा की परिभाषा भी बदल गई है। अंग्रेजी शासन भारत से गए हुए सालों हो गई लेकिन आज भी हम उनकी हिसाब की शिक्षा नीतियां अपनाई जाती है। भारत में सब की नकल होती है। यहां तक की शिक्षा भी दूसरे राज्यों की हिसाब से करती है।

पहले तो विद्यालय को व्यक्ति मंदिर के समान पावन एवं पवित्र मानता था। लेकिन आज के सामान्य लोगों के लिए विद्यालय सिर्फ एक मकान है। "और सिर्फ तितली" नामक उपन्यास हमें आज के जमाने की यानी उत्तर आधुनिक समाज की नव शैक्षिक समस्याओं से रूबरू करवाते हैं। इस उपन्यास में हमें कई प्रकार की विद्यालय देखने को मिलती है और कई प्रकार की शैक्षिक तरीके एवं समस्याएं देखने के लिए मिलते हैं। आज शैक्षिक समस्याएं अनगिनत बढ़ता जा रहा है।

- सरकारी स्कूलों का कम हो जाना।
- स्कूलों में भ्रष्टाचार
- स्कूलों के नाम पर धंधा करना
- बच्चों के ओर अध्यापकों की नजरिया
- प्रमोशन की झंझट एवं नकद देना

सरकारी स्कूलों का कम हो जाना।

भारत में पहले तो बच्चों को सरकारी स्कूलों में दाखिला किया जाता था। लेकिन आज यह बदल गया है। आज बच्चों को मां–बाप बड़े–बड़े स्कूलों में दाखिला करवाने के लिए पापड़ बेल रहा है। क्योंकि आज बच्चों का स्कूल भी उनकी स्टेटस को बढ़ाता है। इसलिए सभी मां–बाप बच्चों को बड़े–बड़े इंटरनेशनल मैनेजमेंट स्कूलों में दाखिला करवाती है। कहने के लिए तो आज सरकारी स्कूल से ज्यादा बेहतर पर्यावरण मैनेजमेंट स्कूल में ही होती है। लेकिन पढ़ाई के बारे में कहा जाए तो सरकार स्कूल में जो पढ़ाई जाती है वह हमारे जीवन के लिए अत्यंत जरूरी होती है। मैनेजमेंट स्कूल सिर्फ उन लोगों को पैसा कमाने के लिए एक सरिया है जिन्होंने वह स्कूल चलाता है। इसीलिए उस स्कूलों में अध्यापक एवं बच्चों के बीच जो संपर्क है वह पैसों की जैसे ही

है। और सिर्फ तितली नामक उपन्यास में इस प्रकार की मैनेजमेंट स्कूलों को दिखाया गया है जिन्होंने पैसा हड़पने के लिए बच्चों को ठूस– ठूस कर अपने स्कूलों में दाखिल किया जाता है। बच्चों की कम्मी होने के कारण आज कई सरकारी स्कूल बंध हो गईं है। बेहतर सुविधा होने के बावजूद भी स्कूल सरकारी होने के कारण माँ बाप बच्चों को वहां दाखिला नहीं करवाती।

स्कूलों में भ्रष्टाचार

आज स्कूलों में कई प्रकार के भ्रष्टाचार हो रहा है। सरकारी जमीन पर स्कूल बनाता है बड़े–बड़े मैनेजमेंट, इसलिए उन्हें अपने स्कूल में उस जगह की मामूली बच्चों का दाखिला भी मजबूरन करवाना पड़ता है। यह गरीब बच्चों को पढ़ाना उसके स्टेटस के लिए बिल्कुल भी सही नहीं है या उचित नहीं है। इस तरह से आने वाले बच्चों से स्कूल मैनेजमेंट अध्यापक और अन्य बच्चों भी बहुत बुरी तरह के व्यवहार करती है। उन बच्चों के साथ हर बदसलूकी कर देती है।

"स्कूल मैनेजमेंट के लिए गरीब बच्चों को लेना अनिवार्य था क्योंकि स्कूल सरकारी जमीनों में बने थे। और तमाम अनाप–शनाप सुविधाएं देते थे। लेकिन मैनेजमेंट गरीब कोटे से आने वाले छात्रों के साथ हर वह बदसलूकी करता था जिससे वह अपमानित हो और खींचकर घर बैट बजाएं"

इसी प्रकार स्कूल की मोटो जो है वह भी बिल्कुल बेकार की थी। बड़े–बड़े शब्दों से वह अपने मोटो तो लिखते हैं लेकिन उनसे एक भी शब्द स्कूल में अपनाता नहीं था।

"स्कूल का मुख्य मोटो था सोचने की आजादी। बोलने की आजादी। उठने बैठने की आजादी। आजादी। सिर्फ आजादी। लेकिन यह बात दीगर है कि स्कूल में किसी को यह आजादी नसीब नहीं है। गार्डन में टीचर बैठक कर कॉफी चाय नहीं पी सकती थी। टीचिंग स्टाफ रूम में बाहर आपस में कोई बात नहीं कर सकता था। बच्चे शोर नहीं मजा सकते थे"।

असल में कहा जाए तो मैनेजमेंट स्कूल के बचे एवं टीचरों के लिए कोई अधिकार नहीं है। सब मनेजमेंट की कठपुतलियां बन कर रह चुके थे। इतनी अन्याय होने के बावजूद भी कोई भी मैनेजमेंट के खिलाफ एक उंगली भी नहीं उठाती थी।

स्कूल के नाम पर धंधा करना

आज स्कूल के नाम पर हो रहे धंधे बहुत ज्यादा बढ़ रहा है। भारतीय दर्शन में स्कूलों को मां सरस्वती का स्थान मानता था और बच्चों के लिए ज्ञान प्राप्त करने की जरिया मानते थे। लेकिन जब से भारत में अंग्रेजों के आगमन हुए थे तब से लेकर आज तक हमारे भारतीय शिक्षा पद्धति में बदलाव आने लगी है। आज स्कूल शिक्षा देने से ज्यादा पैसा कमाने का ज़रिया मना जाता है। आज जितनी भी मनेजमेंट स्कूल घोली गयी है उन सब का लक्ष्य पैसा कमाना ही है।

मैनेजमेंट स्कूल में अध्यापकों को भी कोई अधिकार नहीं है। सबसे बड़ा अधिकार जो है वह मनेजमेंट को ही होता है। आज जितने भी स्कूल खोली जाती है वह विदेश के समान ही खोली जाती है, जिनमें बच्चों के लिए सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती है। उन सुविधाओं के नाम पर बच्चों के मां–बाप से बड़े रकम पैसे लेते हैं। और सिर्फ तितली नामक उपन्यास में हम इस तरह के स्कूल धंधे को देख सकते हैं। स्कूल के नाम पर धंधा करने से बहुत फायदा होते हैं। बच्चों के ज़रूरतों से ज्यादा उन्हें अपने लाभ की परवाह है।

साधारण दरिद्र बच्चों के लिए इस प्रकार के स्कूलों में सिर्फ बेज्जती ही मिलती है। आज स्कूल स्कूल नहीं बल्कि बाजार बन गए हैं। स्कूल के बच्चें बाज़ार में बिकने वाली चीज बन गई है। हर एक बच्चा स्कूल की कमाई बन गई है। माता पिता बच्चों की अच्छी परवरिश के लिए उन्हें बड़े–बड़े स्कूलों में दाखिला करवा देते हैं, लेकिन उन्हीं स्कूलों में उनकी जिंदगी उजड़ जाती है।

उपन्यास में हमें यह साफ साफ दिखाई देते हैं कि जब अम्रता नामक एक अध्यापिका मानसिक विकलांग बच्चों को स्कूल खोलने के लिए एक फॉर्म हाउस के मालिक चौधरी गजराज सिंह के पास चले आते हैं। अम्रता उनसे स्कूल के बारे में बात भी करते हैं, लेकिन चौधरी जी उसके लिए तैयार नहीं हो जाता है। उसके कारण था कि जिस बच्चे के लिए स्कूल खोलना चाहता था, वह मानसिक विकलांग बच्चे हैं। चौधरी जी को लगा इससे उन्हें कोई फायदा नहीं मिलने वाला है। इसलिए उन्होंने साफ साफ मना कर दिया। चौधरी जी स्कूल खोलकर मालामाल होना चाहता था। लेकिन यह बात मानसिक विकलांग बच्चों के लिए स्कूल खोलने से नहीं होगा इसलिए चौधरी जी ने मना कर दिया।

"फायदे से अधिक यह सोशल काम था। चौधरी सोशल वर्क के लिए तैयार नहीं था। उसे तो स्कूल का धंधा फायदे का लगता था, तभी उसने अपने फार्महाउस को देने की पेशकश अमृता से की थी। उसने देखा था कि उसमें प्रॉपर्टी डीलर और बिल्डर दोस्त स्कूल के धंधे में आकर रातों रात मालामाल हो गए थे। अचानक उनकी प्रतिष्ठा भी बढ़ गई थी। शहर के बड़े से बड़े लोग उनके दरवाजे में अपने बच्चों के एडमिशन कराने के लिए हाथ जोड़कर खड़े होते थे। लेकिन जब चौधरी ने अमृता का प्रोजेक्ट देखा तो उसमें पल्ले से पैसे जाने से अलावा आने का कोई रास्ता नहीं था। स्कूल, वह भी मानसिक विकलांग बच्चों का। चौधरी को बात जाँची नहीं। उसे अमृता को स्कूल ना खोलने के लिए सीधे तो मना नहीं किया, लेकिन अमृता से बाद में मिलना जुलना बंद कर दिया"।

इस से व्यक्त होता है कि आज स्कूल धंधा बन गया है। पैसा बनाने का धंधा, जिसमें न कोई न्याय, न नीति। सब लोग सिर्फ फायदे एवं कमाई के बारे में सोचती है।

मैनेजमेंट में बड़ा रक्कम पैसा दिलाकर मां–बाप बच्चों का दाखिला करवा देता है। मनेजमेंट स्कूलों में कई प्रकार के कोटे होते हैं, जैसे पुलिस वालों की पॉलीटिशियन की आदि। इन कोटों में बच्चों को दाखिला करवाने से स्कूलों को लाभ बहुत ज्यादा है। हर क्लास में बच्चों को ठूस– ठूस कर भर दिया जाता है। इसके अलावा स्कूल में बच्चों को जिताने के लिए एवं सुनिश्चित मार्क्स लाने के लिए भी स्कूल मैनेजमेंट पैसा लेते हैं।

"जिस इलाके में स्कूल है, उस इलाके के दरोगा, ट्रैफिक इंस्पेक्टर और डीसीपी का दाखिला के लिए कोटा निर्धारित था। इसके अलावा उन सब का कोटा होता था जो स्कूल को प्रभावित कर सकते थे। नेता, पुलिस, दबंग शिक्षा अधिकारियों और मैनेजमेंट की गजब जुगलबंदी थे दिल्ली के पब्लिक स्कूल"।

"लाखों रुपए बच्चों को पास कराने और सुनिश्चित मार्क्स दिलाने के नाम पर भी ये स्कूल कमाते थे। मनमाफिक मार्क्स और हर हाल में पास होने की गारंटी चाहने वाले बच्चों को वे स्कूल बेस सिस्टम के तहत दाखिला देते थे, जिनके पेपर बी स्कूल ही बनाते थे और सेंटर भी उन्हीं के हम होता था"।

बच्चों के ओर शिक्षकों का नजरिया

स्कूल एक ऐसी संस्था है जहाँ अध्यापक एवं बच्चों के बीच एक घनिष्ठ संपर्क पैदा होता है। स्कूलों में बच्चों को मां–बाप अध्यापकों के भरोसा छोड़ देता है। पहले जमाने में तो गुरु एवं शिष्य के संबंध बहुत पवित्र एवं महान माना जाता था। लेकिन आज यह बदल गई है। आज अध्यापक बच्चियों में भेदभाव करते हैं। आज अध्यापक बच्चों के बीच पैसा जाती आदि सब को लेकर बेदबव करते हैं।

अध्यापकों के लिए आज बच्चे बोझ बन गई है। अध्यापक सालों से बच्चों को पढ़ा कर ऊभ गया है। आज अध्यापकों बच्चों को पढ़ाने एवं उनके भविष्य को लेकर कोई दिलचस्पी नहीं रखती है। उन्हें पढ़ाने के लिए रेडीमेड मेटेरियल चाहिए। वह खुद की काबिलियत पर बच्चों को पढ़ाने से आज रूचि नहीं रखती।

"अधिकांश टीचरों ने अपने सोचने समझने की सभी खिड़की दरवाजे बंद कर लिए थे। उनके लिए टीचर एक नौकरी भर थी। हर चीज उन्हें रेडीमेड चाहिए होती थी। कुछ नया सीखने की उनमें ललक बची नहीं थी। चुगली – चर्चा और निंदा रस में उन्हें आनंद आता था। लोगों की निजी जिंदगी में ताकं – झांक उनके खास शक्ल थे"।

अध्यापक आज अध्यापन छोड़कर दूसरे लोगों के परिवार के बारे में जाने के लिए ज्यादा ध्यान देते हैं। एक ही स्कूल में दो तरह के अध्यापक मौजूद है। एक है पेर्मेनेंट टीचर्स और दूसरे है टेंपरेरी टीचर्स। इन दोनों टीचर्स अपने अपने झुंड बना लेता है और दोनों के बीच अपनी जगह के लिए हमेशा झगड़ा होता रहता हैं। इसी प्रकार अध्यापक बच्चों के बीच कोई समानता नहीं रखती है। हर बच्चों को प्रत्येक प्रकार की श्रद्धा देना पढ़ते हैं, लेकिन आज अध्यापक के नज़र में सिर्फ उन बच्चे आती है जो अमीर घर की होती है। अध्यापक जितना ध्यान एवं श्रद्धा आमिर बच्चों के लिए देते हैं उनसे आधा भी गरीब बच्चों को नहीं मिलता। अध्यापक के सामने सारे बच्चे एक समान होना चाहिए और उन बच्चों को उनकी काबिलियत पर पहचान होना चाहिए ना कि पैसों से।

"हर बच्चा अलग होता है। हम टीचरों को यही समझने की जरूरत है, जो स्कूल में नहीं होता है। लेकिन हमें ईमानदारी से काम करना चाहिए"।

पदोन्नति का झंझट एवं नकद लेन

अच्छी नौकरी एवं उस नौकरी में पदोन्नति होना हर व्यक्ति के ख्वाब होता है। आज अध्यापक अपनी नौकरी में पदोन्नति होने के लिए कई पापड़ बेल रही है।आज के समाज में इंसान की जिंदगी एवं इज्जत को रत्ती भर भी महत्व नहीं है। इंसान से भी ज्यादा श्रद्धा एवं महत्व जानवर को दिया जाता है। अपनी नौकरी में पदोन्नति मिलनी चाहिए तो उन्हें खुद की इज्जत एवं पवित्रता को नष्ट करना पड़ता है। और उसको दूसरों के लिए एक मनोरंजन के साधन बनना पड़ता था।

इस उपन्यास की नायिका तानिया के सामने भी इस प्रकार की एक घटना घटती है। जब तानिया पहले स्कूल में काम कर रहा था तो उसे वहां की एकेडमिक हेड बुलाकर उसे प्रिंसिपल साहब के साथ घूमने के लिए कहा जाता है। इसके बदले तानिया को उसकी नौकरी में पदोन्नति मिल जाएगा। लेकिन यह काम करने के लिए तानिया बिल्कुल भी तैयार नहीं हुआ। क्योंकि उसकी दिल इस काम के लिए उसे इजाजत नहीं दे रहा था। इसीलिए वह हेड से कोई जवाब नहीं दिया। इसी कारण से तान्या को स्कूल से निकाल दिया गया। स्कूल में ऐसे कई अध्यापक हैं जिन्होंने यह बात मानकर उनके साथ घूमता था। उन्हें अपनी नौकरी में पदोन्नति भी मिलती थी। यही आज का समाज है, यही सच है। यहां इस समाज में आज हमें अपनी काबिलियत पर कुछ हासिल करना नामुमकिन बन गया है। अब हम कुछ हासिल भी कर जाए फिर भी उसमें आगे बढ़ना और भी मुश्किल हो गया है।

"लेकिन तानिया यह सब इतना आसान नहीं है। चेयरमैन अमित जैन तुम्हारी टीचिंग स्टाइल के कायल है। थोड़े दिन उनके साथ मिलो झूलो। तुम्हारा काम हो जाएगा। तानिया कोई सवाल करती थी उससे पहले ही पास्ता ने कहा, स्कूल क्लासेस की चिंता मत करना। उनसे मिलने के लिए मैं तुम्हें ऑफिशियल छुट्टी दे दूंगी"। इस घटना से यह व्यक्त होता है कि विद्यालयों में से विद्यार्थी ही नहीं बल्कि अध्यापक भी कई बार शोषण का शिकार बन जाता है। इसके अलावा कई परेशानियों का सामना अध्यापक को करनी पड़ती है। उनमें प्रमुख है अपनी वेतन से नकद वापस देना। अध्यापक के बैंक अकाउंट में पूरी सैलरी तो स्कूल डालते हैं। फिर सैलरी से एक संख्या अध्यापकों को स्कूल में वापस करना पड़ता है। वह भी नकद रूप से। आज स्कूल बच्चे को पढ़ाने से ज्यादा कमाई पर ध्यान देता है। ज्यादातर अध्यापकों को आधी सैलरी मिलती है। स्कूल की ओर से यह शोषण उन्हें चुपचाप सहना पड़ता है।

"हम आपको 40000 का चेक देंगे और आपको उसमें से 15000 वापस करने होंगे वह भी नकद"।

"यह बेईमानी की दुकान चलाते हैं, सर। विद्या का मंदिर नहीं। बच्चों के फीसों से अपनी बिल्डिंग खड़ी करते हैं और बच्चों के जीवन को सुधारने वाले टीचर्स को आधी सैलरी देकर बेवकूफ बनाते हैं"।

उत्तर आधुनिकता शिक्षा के पूर्व अवधारणा को भी अस्वीकार करती है। यहां व्यक्ति संस्था आधारित शिक्षण ग्रहण करने की अपेक्षा व्यक्तिगत अनुभव पर अधिक निर्भर करता है। वह शिक्षा के पूर्व निर्धारित मानदंड को तोड़ता है। यही नहीं वह शिक्षा के क्षेत्र में उच्चवर्ग के एकाधिकार और आधिपत्य को तोड़ते हैं। इसकी जगह दलित एवं शोषित वर्ग के प्रतिनिधि प्रदान करते हैं। इस कारण शिक्षा के क्षेत्र में जो पूर्व प्रचलित नियम और सिध्दांत है उत्तर आधुनिकता उनका अतिक्रमण करते हैं।

आज शिक्षा के नाम पर अनेक बुराइयों का प्रचार–प्रसार हो रहा है। स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी में शिक्षा कार्य कर रहे हैं अध्यापक अपने कर्तव्य पद से भ्रष्ट हो रहे हैं। वहां शिक्षा नाम की चीज शेष नहीं है। रुपयों से एडमिशन हो जाता है। अंक बढ़ जाता है। गुरुवर अपने शिक्षकों को ललचाते है। शिक्षा क्षेत्र बाज़ार का रूप ले लिया है। वैशीकरण, निजीकरण से प्रेरित अर्थ और स्वार्थी की दुनिया में गुरु और शिक्षक के बीच का आदर्श समाप्त हो गया है। दोनों के बीच का संबंध स्वार्थतता पर आधारित है। अपने–अपने मतलब निकालने की दिशा में दोनों कार्य करते हैं। आज के गुरु रिश्वत और सिफारिश के बदले में काम करता है । इस प्रकार उत्तर आधुनिकता शैक्षणिक मूल्यों की इमारत को हिला दी है। स्कूल कॉलेज यूनिवर्सिटी में शिक्षा के नाम पर अनेक बुराइयों का प्रचार–प्रसार हो रहा है। उत्तर आधुनिकता की स्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में जो मूल्य आदर्श थे उससे प्रत्येक व्यक्ति विमुख होता जा रहा है। आज व्यक्तिगत सुख –सुविधा एवं धन उपार्जन करने वाली शिक्षा को अधिक से अधिक महत्व दिया जा रहा है। इस स्थिति में आदर्श शिक्षा प्रणाली से लोगों का पलायन करना स्वाभाविक है। दूसरी बात यह कि वर्तमान जीवन की बड़ी विसंगति देश में फैली शिक्षित बेरोजगारी है। पढ़े–लिखे लोग आज नौकरी की तलाश में दर–दर भटकते हैं। पैसा और सिफारिश का बोलबाला है। नौकरी न मिल पाने की पीड़ा नवयुवा को भोगनी पड़ती है। हताशा के कारण युवा वर्ग शिक्षा से पलायन करता है शैक्षणिक मूल्यों नैतिकता से पलायन करता है।

सन्दर्भ सूची

1. और सिर्फ तितली: पृष्ट 6
2. और सिर्फ तितली: पृष्ट 28
3. और सिर्फ तितली: पृष्ट 35–36
4. और सिर्फ तितली: पृष्ट 109
5. और सिर्फ तितली: पृष्ट 110
6. और सिर्फ तितली: पृष्ट 28
7. और सिर्फ तितली: पृष्ट 36
8. और सिर्फ तितली: पृष्ट 82
9. और सिर्फ तितली: पृष्ट 94
10. और सिर्फ तितली: पृष्ट 95